हिन्दी Hindi Class 11 Important Question Chapter 14 बादल को घिरते देखा

1. "बादल को घिरते देखा है" काव्य किस पर आधारित है?

उत्तर: यह काव्य प्रकृति की सुंदरता पर आधारित है।

2. कविता में कवि ने कैसे पर्वत का वर्णन किया है?

उत्तर: कविता में कवि ने एक ऐसे पर्वत का वर्णन कर रहे है जो स्वच्छ, मॉल रहित और सफेद रंग का है।

3. चकवा – चकई का क्या अर्थ है?

उत्तर: चकवा – चकई एस सुनहरे रंग के पक्षी हैं। नर पक्षी मादा पक्षी से रात भर अलग रहते हैं और उनका मिलन सूर्य उदय से पूर्व नहीं होता। कवि इस कविता में इनके मिलन की बात कहते हैं जो एक लंबी जुदाई के बाद मिल रहे है।

4. कवि कविता में कैसे घाटी का वर्णन किया है?

उत्तर: कवि नागार्जुन ने कविता में घाटी को बर्फानी कहा है जो धरती से 1000 फुट ऊंचाई पर है और जहां पर जाना मुश्किल है।क्योंकि ये बर्फ से ढकी रहती है।

5. कवि बर्फानी घाटी पर क्या देखते हैं?

उत्तर: कभी बर्फानी घाटी पर एक कस्तूरी मृग को देखते है जो अपने ही नाभि में स्थित कस्तूरी की सुगंध को खोज रहा हैं।

6. कस्तूरी मृग दौड़ दौड़ कर क्या ढूंढ रहा है?

उत्तर: कवि कहते हैं की कस्तूरी मृग के नाभि में कुछ सुगंध होती है यह बात मृग को मालूम नहीं होती। वह इसी सुगंध को दौड़ दौड़ कर ढूंढ रहा है।

7. कवि चकवा- चकई के मिलन का कैसा दृश्य प्रस्तुत किया है?

उत्तर: कवि कहते हैं चकवा चकई का मिलन एक लंबे समय के बाद हो रहा है क्योंकि कवि का मानना है कि वे रात भर अलग रहकर, उनका मिलन प्रभात में एक सरोवर के किनारे छोटे-छोटे घास की एक दरी पर हो रहा है।

8. कविता के कवि द्वारा किए गए तीन प्राकृतिक दृश्य को लिखो।

उत्तर: i. वसंत ऋतु की प्रभात मैं खीले पीले फूलों की सुंदरता का दृश्य।

ii. कमल पर ओस की बूंदों का गिरने का जो छोटे मोतियों की तरह दिखाई दे रही का दृश्य।

https://www.evidyarthi.in/

iii. पहाड़ी लोगों की सुन्दरता का दृश्य।

9. कवि ने वसंत ऋतु की सुबह का कैसे वर्णन किया है?

उत्तर: कवि ने बसंत ऋतु का वर्णन इस तरह किया है सुबह की सुंदर बेला है। वायु धीरे-धीरे मंद गति से बह रही है। जो वातावरण को सुगंधित कर रही है।सूरज अपनी लालिमा से युक्त किरणें पूरी पृथ्वी पर बिखेर रहा है। बसंत ऋतु की प्रभात की ऐसी मनोरम बेला में मानसरोवर के किनारे एक चकवा और चकई का रात भर की विरह के बाद मिलन हो रहा है। प्रभात में उगते हुए सूर्य की हल्की और मीठी गिरने आसपास के पर्वतों पर की चोटियों को प्रकाशित कर रही हैं जिसके कारण वह चोटियां स्वर्ण रंग की प्रतीत हो रही हैं।

10. कवि ने चकवा और चकई को क्या करते देखा है?

उत्तर: कवि ने चकवा और चकई के माध्यम से दो बिछड़े हुए प्रेमियों में मिलने के बाद होने वाले मीठे वाद – प्रतिवाद का जिक्र किया है कवि ने चकवा और चकवी को प्यार से झगड़ते हुए देखा है। जब भी रात भर एक दूसरे से जुदा रहने के बाद अगली सुबह मानसरोवर के किनारे मिलते हैं तो प्यार से एक दूसरे को एकटक देखते हैं, मानो एक रात्रि के बाद नहीं, बल्कि वर्षों बाद मिल रहे हों।

11. कवि ने भिड़ते महामेघ का कैसा चित्रण किया है?

उत्तर: कवि के अनुसार जब तेज हवाएं चलती हैं तो पहाड़ों के समूह प्रभावित होते हैं जिनके कारण आसपास में भयंकर गड़गड़ाहट शुरू हो जाती है उन्हें देखकर लगता है जैसे पहाड़ लड़ रहे हैं। इसलिए कवि ने कहा है की कैलाश पर्वत की ऊंचाई से बादलों को एक साथ टकराते हुए एवं गरजते हुए कवि ने बहुत ध्यानपूर्वक देखा है।

12. अमल धवल गिरि के शिखरों पर

बादल को घिरते देखा है

छोटे-छोटे मोती जैसे

उसके चित्र तू ही तोहीन दोनों को

मानसरोवर के उन स्वर्णिम

कमरों पर गिरते देखा है

उपरोक्त पंक्तियों का भावार्थ लिखो।

उत्तर: उपरोक्त पंक्ति में कवि कहते हैं की हिमालय की ऊंची चोटियों जो बर्फ से ढकी रहती हैं और इतनी सुंदर लगती हैं कि देखने वाले एक पल भी अपने पलकें नहीं झपकते। कवि हिमालय की चोटियों के बारे में वर्णन करते हुए कहते हैं इनकी हिमालय की चोटियां धूप के कारण बहुत ही ज्यादा उज्जवल नजर आती हैं इतना ही नहीं ओस की बूंदें कवि को छोटे-छोटे मोतियों के समान लगती हैं जब यह छोटी-छोटी ओस की बूंदे मानसरोवर झील में उगे हुए कमल के फूलों पर गिरती हैं तो पूरे कमल का फूल का सौंदर्य ही बदल जाता है। बादल से घिरी चोटियां बहुत ही लुभावनी लगती हैं। अतः इन पक्तियों में कवि हिमालय की चोटियों की सुन्दरता की व्याख्या की है।

https://www.evidyarthi.in/

13. शतदल लाल कमल वेणी में,

रजत-रचित मणि-खचित कलामय

पान पात्र द्राक्षासव-पूरित

रखे सामने अपने-अपने

लोहित चंदन की त्रिपदी पर,

नरम निदाग बाल-कस्तूरी

मृगछालों पर पलथी मारे

मदिरारुण आखों वाले उन

उन्मद किन्नर-किन्नरियों की

मृदुल मनोरम अँगुलियों को

वंशी पर फिरते देखा है।

उपरोक्त पंक्तियों का व्याख्यान करें।

उत्तर: बादल को घिरते देखा है कविता के इस अंतिम छंद में हिमालय के प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है। कवि हिमालय पर्वत में रहने वाले लोगों के विषय में कहते हैं कि यहां के लोग हमेशा सुंदर दिखते हैं हमेशा संबर कर रहते हैं यहां की औरतें बालों में लाल कमल के फूल लगाए फिरती हैं। एवं किन्नर लोग अंगूर से बनी मदिरा पीकर मस्त रहते हैं। कवि ने उनको कस्तूरी मृग के नरम मृग – छाल पर बैठे देखा है। किन्नर लोग हमेशा झूमते गाते हैं और उनकी सधी हुई उंगलियाँ बांसुरी पर घूम रही है और वे सुर- ताल-छंद खुद ही बना कर गाते हैं। कवि ने यह सब अपनी आंखों से देखा है और उन्हीं बातों को यहां व्यक्त किया है।

14. कालिदास द्वारा रचित खंडकाव्य "मेघदूत" के बारे में लिखें। नागार्जुन ने अपनी कविता में किन स्थानों को खोजने की कोशिश की है?

उत्तर: मेघदूत में कालिदास ने प्रेमीहृदय की भावना को व्यक्त किया है। इसमें कुबेर यक्ष को अलकापुरी से निकाल देता है जो राम गिरी पर्वत पर रहता है। वर्षा ऋतु में उसे अपनी प्रेमिका की याद सताने लगती है तब वह सोचता है किसी भी तरह से उसका अलकापुरी लौटना संभव नहीं है इसलिए वे अपनी प्रेमिका तक अपना संदेश दूत के मध्य से भेजने का निश्चय करता है। इसलिए मेघ के माध्यम से अपना संदेश बिरहाकुल प्रेमिका तक भेजने की बात सोची। जिन स्थानों का कालिदास ने अपनी कविता मेघदूत में उल्लेख किया था। उन स्थानों को खोजने का कवि ने बहुत प्रयास किया लेकिन वह असमर्थ रहे। कवि नागार्जुन हिमालय पर्वत का आंगन यहां पर भगवान कुबेर देव की अलका नगरी को ढूंढने का प्रयास कर रहे हैं मगर उनको भगवान कुबेर देव की अलका नगरी नहीं दिखाई दी। अकाश गंगा नदी को भी ढूंढने का प्रयास किया लेकिन कवि असमर्थ रहे।

15. निशाकाल से चिर-अभिशापित

https://www.evidyarthi.in/

बेबस उस चकवा-चकई का

बंद हुआ क्रन्दन, फिर उनमें

उस महान सरवर के तीरे

शैवालों की हरी दरी पर

उपरोक्त पंक्तियों का व्याख्यान करें।

उत्तर: उपरोक्त पंक्तियों में कवि ने चकवा चकई के प्रेम को दर्शाया है। यहां कवि को दूसरी ओर चकवा चकई के जोड़े दिखाई दिए। इन्हें यह अभिशाप मिला हुआ है यह दोनों रात्रि में एक साथ समय नहीं बिता सकते इस कारण यह दोनों रात्रि में अलग-अलग रहते हैं और दूसरे दिन सुबह सूर्य के उदय होने के बाद ही मिलते हैं एक दूसरे को एकटक देखते हैं मानो एक रात्रि के बाद नहीं बलिक कई वर्षों के बाद मिल रहे हो। इनका मधुर मिलन मानसरोवर के किनारे छोटी-छोटी घास की एक दरी पर हो रहा है।

16. कवि नागार्जुन हिमालय में रहने वाले लोगों को कैसे वर्णित किया है?

उत्तर: कवि नागार्जुन ने अपनी कविता में हिमालय की प्राकृतिक सौंदर्य का वर्णन किया है। कवि हिमालय पर्वत पर रहने वाले लोगों के विषय में कहते हैं यहां के लोग हमेशा सुंदर दिखते हैं और अपने आप को सज सँवरकर कर रखते हैं। यहां की औरतें भी बहुत सुंदर हैं और अपने बालों पर लाल रंग के कमल के फूल लगाकर रखती हैं। यहाँ के लोग अगूंरों से बनी मदिरा पीते हैं। किन्नर मदिरा पीकर मस्त रहते हैं और गाते बजाते रहते हैं, सूर – ताल – छंद खुद ही बना कर गाते हैं और लोग मृग छाल के नरम आसन पर बैठते है।अतः यहाँ के लोग बांसुरी बजाने में माहिर होते हैं। कवि ने यह सब अपनी आंखों से देखा है और इन बातो को अपनी कविता मे लिखा है।

https://www.evidyarthi.in/